Printed by Chintaman Sakharam Deole, at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India Society's Building, Sandhurst Road, Girgaon-Bombay.

Published by Udaylal Kashliwal, Proprietor of Hindi-Jain Sahitya-Prasarak Karyalaya, Chandawadi, opposite to Madhavbag, Girgaon-Bombay.

कर्म-दहन-विधानकी उपवास-विधि

कर्मदहन विधानके कुल उपवास १९६ हैं। आठ कर्मोंकी १४८ प्रकृतियोंके १४८ और कर्म नाश हुए बाद सिद्धोंको जो आठ गुण प्राप्त होते हैं उनके ८। कुल लोग अप्टमी आदि पर्व तिथियोंमें भी कर्मदहन-विधानके उपवासोंको करके व्रतको जरदी जरदी पूरा कर देते हैं; परन्तु यह ठीक नहीं है। कारण-कर्म-दहनका अर्थ है—कर्मोंका नाश; इसालिए जिस गुणस्थानमें जितनी प्रकृतियोंका नाश होता है उस गुणस्थानकी संख्याके अनुसार उस तिथिके उतने ही उपवास करने चाहिए। उदाहरणेक लिए कल्पना कीजिए कि चौथे गुणस्थानमें ७ प्रकृतियोंका नाश होता है, इसलिए चौथके ७ उपवास करने चाहिए। उसी भाँति नौवें गुणस्थानमें २६ प्रकृतियोंका नाश होता है, इस कारण नौमीके ६६ उपवास करने चाहिए। इसी प्रकार और और तिथियोंमें भी समझना चाहिए।

भ इस कमसे चौथके ७+ सप्तमीके ३+ नौमीके ३६+ दसमीका १+ वारसके १६+ चौदसके ८५+ और इसके बाद अष्टमीके ८+ ऐसे कुछ मिलाकर १५६ उपवास हुए।

जाप्य-विधि।

બ્લ્લું પ્રેજી

जिस जिस तिथिके उपवास किये जायँ, उस दिन जितनी प्रकृतियोंका नाश हुआ है, उन सबके उतने उतने ही मंत्र हैं। उन मंत्रोंकी कमसे एक एक दिन एक एक सौ आठ आठ जाप देनी चाहिए। उदाहरणेक छिए कल्पना कीजिए, चौथे गुणस्थानमें ७ प्रकृतियोंका नाश होता है। इस कारण चौथके सात उपवास करना पढ़ेंगे। इन सातों ही उपवासोंके सात मंत्र हैं। सो एक एक उपवासके दिन एक एक मंत्रकी एक एक सौ आठ आठ जाप देनी चाहिए। इसी माँति सब तिथियोंमें समझना चाहिए। उपवासोंकी कुछ संख्या है १९६। इस हिसाबसे मंत्रोंकी संख्या भी १९६ ही हुई। ये सब मंत्र नीचे छिसे जाते हैं।

चौथके ७ उपवासके सात मंत्र ।

ॐहीं मिथ्यात्व-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः । ॐहीं सम्यक्मिथ्यात्व-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः । ॐहीं मिश्र-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः । ॐहीं अनन्तानुवन्धिकोध-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः । ॐहीं अनन्तानुवन्धिमान-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः । ॐहीं अनन्तानुवन्धिमाया-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः । ॐहीं अनन्तानुवन्धिकोभ-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः ।

सप्तमीके ३ उपवासके तीन मंत्र ।

ॐहीं नरकायुष्कर्भरिहताय सिद्धाय नमः। ॐहीं तिर्थगायुष्कर्भरिहताय सिद्धाय नमः। ॐहीं देवायुष्कर्भरिहताय सिद्धाय नमः।

नौमीके ३६ उपवासके छत्तीस मंत्रः।

ॐहीं निद्रानिद्रा-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
ॐहीं प्रचलाप्रचला-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
ॐहीं स्त्यानगृद्धि-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
ॐहीं नरकगित-कर्मरहिताय सिद्धाय तमः।
ॐहीं तिर्यग्गति-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
ॐहीं नरकगत्यानुपूर्वी-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
ॐहीं तिर्यग्गत्यानुपूर्वी-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।

चेंहीं एकेन्द्रिय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं द्वीन्द्रिय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं त्रीन्द्रिय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं चतुरिन्द्रिय-कर्परहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं स्थावर-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं आताप-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। केंहीं उद्योत-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। क्ट्रीं परवात-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। केंद्री सुक्ष्म-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। 🎏 ही पत्यारुयानावरणकोय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। । ॐहीं भत्याख्यानावरणमान-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। । द्रृहीं मत्याख्यानादरणमाया-कंमरहिताय सिद्धाय नमः । ु ॐहीं प्रत्याख्यानावरणलोभ-कमेरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं अप्रत्याख्यानावरणकोध-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः । अर्दा अप्रत्याख्यानावरणमान-क्रमेरिहताय सिद्धाय नमः। ं ॐहीं अत्रत्यारूपानावरणमाया-क्रमेरहिताय सिद्धाय नमः। ^{}ॐ}हीं अप्रत्याख्यानावरणङोभ-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः । । ॐहीं नषुंसक्येद-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। । अंदी स्थीवेद-फर्मरहिताय सिद्धाय नमः। किंती पुरुषवेद-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। े ॐहीं हास्य-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः । **ँ**ही रित-क्रमरिहताय सिद्धाय नमः।

भँहीं अरति-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। भँहीं शोक-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। भँहीं भय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। भँहीं जुगुप्सा-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। भँहीं संज्वलनकोध-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। भँहीं संज्वलनमान-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। भँहीं संज्वलनमाया-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।

दसमीके १ उपवासका एक मंत्र । महीं संज्वलनलोभ-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः । बारसके १६ उपवासके सोलह मंत्र ।

भूहीं निद्रा-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
भूहीं प्रचला-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
भूहीं मितृज्ञानावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
भूहीं श्रुतज्ञानावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
भूहीं अवधिज्ञानावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
भूहीं केवलज्ञानावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
भूहीं केवलज्ञानावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
भूहीं चक्षुदर्शनावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
भूहीं अवश्वदर्शनावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
भूहीं अवश्वदर्शनावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।
भूहीं केवलदर्शनावरण-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।

ॐहीं दानान्तराय-कर्मरिहताय सिद्धाय नमः । ॐहीं लाभान्तराय-कर्मरिहताय सिद्धाय नमः । ॐहीं भोगान्तराय-कर्मरिहताय सिद्धाय नमः । ॐहीं लपभोगान्तराय-कर्मरिहताय सिद्धाय नमः । ॐहीं वीर्यान्तराय-कर्मरिहताय सिद्धाय नमः ।

चौदसके ८५ उपवासके पचासी मंत्र । ॐहीं असातावेदनी-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। अँही औदारिकशरीरनाम-कर्गराहताय सिद्धाय नमः ॐहीं वैक्रियकशरीरनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं आहारकशरीरनाम-क्रमेरिहताय सिद्धाय रमः। ॐही तेजसञ्जरीरनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ं अँहीं कार्पाणशरीरनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। अँही औदारिकवन्धननाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ब्यूँही वैज्ञियकवन्धननाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं आहारकवन्धननाग-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं तेजसवन्धननाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। "अँहीं कार्भाणवन्थननाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ं ॐहीं औदारिकसंघातनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः । ॐ हीं वैक्रियक संघातनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ं अही आहारकसंघातनाय-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ं अंदी तजससंघातनाम-कर्षरहिताय सिद्धाय नमः। ं वें ही कार्माणसंचातनाम-कर्मरहिताय सिद्धार्यनाः ।

अहीं औदारिकाङ्गोपाङ्गनाम-कर्मराहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं वैक्रियकाङ्गोपाङ्गनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं आहारकाङ्गोपाङ्गनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। किंहीं समचतुरस्रसंस्थाननाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं न्यग्रोधपरिमण्डलसंस्थाननाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः अँहीं स्वस्तिकसंस्थाननाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः । ॐहीं वामनसंस्थाननाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं कुञ्जकसंस्थाननाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं हुण्डकसंस्थाननाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं वज्रष्टपभनाराचसंहनननाम-कमेरहिताय सि०नमः कँहीं वज्रनाराचसंहनननाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः । ॐहीं नाराचसंइनननाम-कर्मराहिताय सिद्धाय नमः। ॐह्री अर्धनाराचसंहनन-क्रमेरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं कीलकसंहनननाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं स्फाटिकसंहनननाम-कर्मराहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं क्यामवर्णनाम-कर्भरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं हरिद्वर्णनाम-कर्परहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं पीतवर्णनाम-कर्मराहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं अरुणवर्णनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। क्हीं श्वेतवर्णनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं तिक्तरसनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ्र्वें कटुकरसनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।

्रिंही मधुररसनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः । \ॐहीं आम्लरसनाम-क्रभेरहिताय सिद्धाय नमः । ॐहीं कसायलरसनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। क्रिं मृदुस्पर्शनाम-क्रमेरहिताय सिद्धाय नमः। । ॐहीं कठोरस्पर्शनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। े ॐहीं शीतस्पर्शनाम-कर्परहिताय सिद्धाय नमः। । अही उप्णस्पर्शनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नंमः। । ॐहीं रूझस्पर्शनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। । ॐहीं स्निग्धस्पर्शनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। व्यक्ति गुरुस्पर्धनाम-कर्मरहिताच सिद्धाय नमः। । ॐहीं छन्नस्पर्शनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। । श्रेंही सुगन्धनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। क्षीं दूर्गन्धनाय-क्षमेरहिताय सिद्धाय नमः। ं अँहीं देवगत्यानुपूर्वीनाम-कर्मरहिताय सिखाय नमः। । अही अगुरुनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। केंही लघुनाम-ऋषेरहिताच सिद्धाय नमः। क्रैंकेंदी उच्छासनाम-फर्भेरहिताय सिद्धाय नमः। अंती उपवातनाम-ऋर्मरहिताय सिद्धाय नमः। विंहीं शुभविहायोगितनाम-कर्मरिहताय सिद्धाय नमः । ं क्रिंही अशुभीवहायोगितनाम-कर्षरिहताय सिद्धाय:नमः क्रेंही अपर्याप्तनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। र्वेती स्थिरनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः।

ॐहीं अस्थिरनाप-कर्मरहिताय सिद्धाय नपः । ॐहीं ग्रभनाम-कर्भरहिताय सिद्धाय नमः। **ँ**हीं अशुभनाम-कर्भरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं दुर्भगनाम-कर्भरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं सस्वरनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं दुःस्वरनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं अनादरनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं अयशोनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः । ॐहीं यशोनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं निर्माणनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं नीचगोत्रनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं देवगतिनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं सातावेदनीनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं नरकायुर्नाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः । ॐहीं मनुष्यगतिनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः । 🖖 ॐहीं मनुष्यगत्यानुपूर्वीनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः 🌵 कँहीं पञ्चेन्द्रियजातिनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं त्रसनाम-कर्भरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं वादरनाम-क्रभेरिहताय सिद्धाय नमः। कँहीं पर्योप्तिनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः । अँहीं सुभगनाम-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः। ॐहीं आदरनाप-कर्मरहिताय सिद्धाय नमः ।

्रृंही उचगोत्रनाम-कर्भरिहताय सिद्धाय नमः । । ॐही यशोनाम-कर्मरिहताय सिद्धाय नमः । । ॐही तीर्थक्करनाम-कर्मरिहताय सिद्धाय नमः ।

इस प्रकार १४८ कर्म-प्रकृतियोंका क्षय कर आत्मा मोक्ष चढ़ा नाता है। फिर वह संसारमें कभी नहीं आता। मोक्ष आत्मा-का सिद्ध कहते हैं। सिद्ध अवस्थामें उसके अनन्त गुण प्रगृह होते हैं। उनमें आठ गुण मुख्य हैं। इन आठ गुणोंके अप्टमीके आठ उपवास कर प्रत्येक दिन कममें नीचे दिखे आठ मंत्रोंकी जाप देनी चाहिए।

अप्टमीके ८ उपवासके आठ मंत्र।

भूही अनन्तसम्यवत्त्र-गुणसहिताय सिद्धाय नमः। भूही अनन्तदर्शन-गुणसहिताय सिद्धाय नमः। भूही अनन्तद्दीर्घ-गुणसहिताय सिद्धाय नमः। भूही अनन्तदीर्घ-गुणसहिताय सिद्धाय नमः। भूही स्थ्यत्त्र-गुणसहिताय सिद्धाय नमः। भूही अमृत्तिक-गुणसहिताय सिद्धाय नमः। भूही अगुन्त्रघु-गुणसहिताय सिद्धाय नमः। भूही अगुन्त्रघु-गुणसहिताय सिद्धाय नमः।



नमः सिद्धेभ्यः

कर्म-दहन पूजाविकान ।



समुचय अप्टकर्म-दहन पूजा। अडिल छन्द् ।

कोक-शिखर तन छाँड़ि अमुरति है रए, चेतन ज्ञान-स्वभाव ज्ञेयतैं भिन भए। कोकाळोक सु काल तीन सब दिधि घनी-जानी सो जिनदेव जजौं बहु थुति उनी ॥

कैँहीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं । ॐहीं णमो सिद्धांणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं । ॐही णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र मम सिन्निहितो मन भन नषट् सन्निधिकरणं ।

॥ अथाष्टक ॥ चाल-जोगीरासा । अजर अखंड सदा अविनाशी, तीन छोक सिरताजा। है सर्वज्ञ अनाकुल मूराति, तीन भवनके राजा। ऐसे सिद्ध सदा तिनके पद, पूजों भक्ति जपाई। क्षीरोदाध-जल कनक-झारिका निर्मल जर करि भाई॥

ॐहीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपागीति स्वाहा ॥

वातवलय तनुवात तीसरो, तामें तिन थिति कीनी। आवागमन रहाँ। भव भीतर, अपनी परिनति चीनी । ऐसे सिद्ध सदा तिनके पद, पूजों भक्ति उपाई। पावन चंदन घसि जल निर्मल, अलि-पंकति सुखदाई ॥ ॐहीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्टिने संसारतापविनाशनाय चंदनं

निर्वपामीति स्वाहा ॥

जा तनतें शिवथान पधारे, तातें कछुक घटाई। है विजन-परजाय ज्ञान-धन, दुख नहिं पइये भाई। ऐसे सिद्ध सदा तिनके पद, सिरधरि हाथ नवाऊँ। अक्षततें पूजा तिन केरी, करि करि धरि सुर गाऊँ ॥ अं हीं णमी सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपद्वासये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

अप्ट करम-रज रंच न पड्ये, निर्मेल अनि अघहारी। तिनके चरण-कमल पति पति दिन, होवे घोक हमारी। सुरतम-भूल महा गॅंधथानक, जिनके चरण चढ़ाऊँ। ता फल नाशे मदन महा दुड, और कहा जस गाउँ॥ ओंही णेंगे सिद्धाणं सिद्धपरमेछिने कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निवंपामीति स्वाहा ॥

जोतिसहपी निज गुन-गर्भित, कर्म-कलंक न पड्ये । ताकी शुति हरि मुरसे गावें, ता फल शिव-मुख लड्ये। ऐसे सिद्ध सदा तिनके पद, सुध नैवेद्य चढाऊँ। ता फल होय सुधा निहं कवहूँ, थिर है निज गुन गाऊँ॥ ॐहीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिने क्षुद्रोगविनाशनाय नैवेद्यं निवेपामीति स्वाहा॥

लोकालोक पदारथ सव तिन, ज्ञान विषे झलकाये। तिन जाननमें खेद न उपजै, काच समा समझाये। ऐसे सिद्ध सदा तिनके पद, दीपक मनमें लाऊँ। ता फल नाश अज्ञान तनो है, पूजन फेर न आऊँ॥ ॐहीं णमे। सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिने मोहान्धकारविनाशनाय दी५ निर्वपामीति स्वाहा॥

धूपायन निज भाव वनाये, शुक्तलध्यान करि वहनी।
अप्ट करम शुभ धूप वनाई, हरप हरप करि दहनी।
ऐसे सिद्ध सदा तिनके पद, पूनों भक्ति उपाई।
ताके फल सिन्न पदवी लहिये, काल अनँत सुखदाई।।
अँहीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिने अप्टकमीनिध्नंसनाय धूपं
निर्वेपामीति स्वाहा॥

पंचमगित तिनको स्रुध वासो, और थान निहं जावें।
ऐसो सुख पायौ तहँ थिति करि, और टाम निहं पावें।
ऐसे सिद्ध सदा तिनके पद, पूजों भक्ति उपाई।
ताके फल शिवको फल लहिये, और कहा अधिकाई॥
ॐहीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेछिने मोक्षफलप्राप्तये फलं
निर्वेपामीति स्वाहा॥

अप्ट गुना तिनके मुख गाये, गुन अनंतके घारी।
नाम लिये नित मंगल होंबै, तिन पद घोक हमारी
ऐसे सिद्ध सदा तिनके पद, पूजों भक्ति उपाई।
अप्ट कर्म तातें क्षय पावें, अप्ट गुनोत्सव थाई॥
ॐहीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घ
निर्वपामीति स्वाहा॥

दोहा।

पूजा तिनकी करत ही, सिद्ध होय सब काम । तातें अठ विधि द्रव्य ले, पूजों सब सिध घाम ॥ ॐहीं॰ अनर्वपदप्राप्तये महार्च निर्वपामीति स्वाहा॥

(?)

ज्ञानावरणी-कर्म-विनाश पूजा। गीताछंद।

ज्ञानवरनी पाँच विधि हैं, ज्ञान गुन जियको हन्यो। तातें सुजिय विन ज्ञान है वहु, काल चिर चडगति फिन्यो। ते ज्ञानवरनी घात निज गुन, ज्ञानकों निरमल कियो। सो सिद्ध चेनन ज्ञान-सुख-पिंड, जन्म-वनकों छेदियो॥

ॐहीं पंचप्रकार ज्ञानावरणरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अवी निवेपामीति स्वाहा ॥

तीन शत छत्तीस विधि मति, ज्ञान है के परनयो। मतिज्ञानवरनी ज्ञान मतिकों, घातिक जय पद लयो। ते ज्ञानवरनी घाति निज गुन, ज्ञानको निरमल कियो । सो सिद्ध चेतन ज्ञान-सुख-पिंड जन्मवनकों छेदियो ॥ ॐहीं पट्त्रिशद्धिक—त्रिशतप्रकारमतिज्ञानावरणविनाशनाय सिद्ध-परमोष्ठिने अर्घ निवेपामीति स्वाहा ॥

जो अर्थतें अर्थात्र जानें, ज्ञान श्रुत सो वरनयो । सो अंगपूरव दोय विधि श्रुति—ज्ञानवरनीसौं जयो । ते ज्ञानवरनी घाति निज गुन, ज्ञानको निर्मल कियो । सो सिद्ध चेतन ज्ञान-सुख-पिंड, जन्मवनकौं छेदियो ॥ ॐहीं द्विप्रकारश्रुतज्ञानावरणरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्व-पामीति स्वाहा ॥

जे अवाधि तीन प्रकार देशां, संर्व, परमां जानिये। इन घाति है सो अवधिवरनी, अवधित्रय विधि हानिये। ते ज्ञानवरनी घाति निज गुन, ज्ञानकों निर्मेळ कियो। सो सिद्ध चेतन-ज्ञान-सुखपिंड जन्मवनकों छेदियो॥ ४॥ ॐहीं अवधिज्ञानावरण-रहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्व-पामीति स्वाहा॥

मनज्ञान ऋज अक विषुल दो विधि, पारके मनकी छखै।
यम घात मनपरजय सुवरनी, ज्ञानकी घातिक असै।
ते ज्ञानवरनी घाति निज गुन, ज्ञानकों निर्मल कियो।
सो सिद्ध चेतन ज्ञान-सुख-पिंड जन्मवनकों छेदियो।।
ॐहीं मनःपर्ययज्ञानावरण-रहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा॥

छोक सब त्रय कालकी पर्याय केवलमें रही। इस ज्ञान घातक वरन केवल, सर्वघाती वरनही। ते ज्ञानवरनी घाति निज गुन, ज्ञानकों निर्मल कियो। सो सिद्ध चेतन ज्ञान-सुख-पिंड, जन्म-वनकों छेदियो॥ ॐहीं केवल्ज्ञानावरणरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्व-पातीति स्वाहा॥

वरिन पाँचों ज्ञान-मल धोय, ज्ञान सव निज सुध करचो ।
छाँडि जड़ तन लिख अपावन, मूरती विन तन धच्यो ।
अव रह जामन-मरन करते, ज्ञान अविचल तिन ठयो ।
ते नमूँ कर सिरधारि पलपल, मनुप भव हम फल लयो ॥
ॐहीं पंचप्रकार-ज्ञानावरणरहिताय सिद्धपरमेष्टिम्यो महाधै
निर्वपामीति ॥

(२)

दर्शनावरण-कर्भ-विनाश पूजा।

अडिस छंद।

ना दर्शनकी यात करन हारी प्रकृति । तिन याती जियकी अनंत देखन शकति । दर्शन यातनहारी, तिन याती सही । ता सिथ पद शुति थारि, नमूँ त्रिशुवनमही ॥ १ ॥

भेंदी नवमकार्रवेदीनावरणरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्व-पानीनि स्वाहा ॥ चक्षु थकी अवलोकन दर्शन-चखु कहा। या दर्शनकों हने सु चखुवरनी चहा। दर्शन घातनहारी, तिन घाती सही। ता सिघ पद थुति घारि नमूँ त्रिश्चवनमही।। २॥

ॐहीं चक्षुदर्शनावरणरहिताय सिद्धपरमोष्ठिने अर्घ निर्वपा-मीति स्वाहा।

> चक्षु विना नौइन्द्री मनतें जो छखै। सो अचक्षुदश जान घाति वरनी अखै। दर्शन घातन०॥ ३॥

ॐहीं अचक्षुदर्शनावरणरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्ध निर्वपा॰ मीति स्वाहा ॥

अगली पिछली लखै अवधिदर्शन कहाो । अविध दर्शनावरनी ताको क्षय रह्यो । दर्शन घातन० ॥ ४ ॥

ॐ हीं अवधिद्शेनावरण-कर्मरहिता सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्व-पामीति स्वाहा ॥

लोकालोक निहार दरश केवल कहाो। केवलदर्शनवरनी यहु गुन जय लहाो। दर्शन घातन०॥ ५॥

. ॐहीं केवलदर्शनावरणरहिताय सिद्धपरमोष्ठिने अर्ध निर्वपा-मीति स्वाहा ॥

चाल-जोगीरासा।

निद्रानिद्राकर्म-उदै जिय, सेन वहुत विस आवै।
अपनी शक्ति गमाय कर्म-वल, म्रित जड़िसी थावै।
ऐसी निद्रा घाति आपनी, शक्ति सकल परकाशी।
ते सिध सुख-सागर्मं गिभत, तीन लोक में भाषी॥ ६॥
ॐदीं निद्रानिद्राकर्म-रहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति

ंस्वाहा ॥

मचलामचला होय उदे तव, नीर मुखे अँग हाके। अर्द्ध मुँदे रहे अर्द्ध खुले चखु, जीव जोर नहिं चाले। ऐसी निद्रा०॥ ७॥

ॐहीं प्रचलप्रचलाकर्म-रहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घे निर्व-पामीति स्त्राहा ॥

कर्मस्थानकंगृद्धि उदं तें, जोर होय अधिकाई।
भूछै निज सुध काज करै वहु, ज्ञान न रंच रहाई।
ऐसी निद्रा०॥ ८॥

र्ङ्गहीं स्थानगृद्धिकर्भरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्थाहा ॥

निद्रा अल्प सु होय जीवकों हाँक दिये उठि आवे।
निद्रा नामक कर्भ यह है, या विस चेतन थावे।
ऐसी निद्रा ।। ९॥
ॐहीं निद्राकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्टिने अर्व निर्वेषामीति स्वाहा॥
भचलाकर्म-उद्दे जय होब, जीव चेत युत सोबे।

तुच्छ शोरथकी तत्क्षण ही, सुनकरि चेत सु होवै। ऐसी निद्रा०॥ १०॥

ॐहीं प्रचलाकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा॥ दोहा।

द्र्शनावरनी नौ पक्रति, घाति भये सिध सोय।
ते सब अर्घ चढ़ायके, पूजौं मन-मद खोय।। ११।।
ॐहीं नवप्रकारदर्शनावरणकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने पूर्णीर्घ
निर्वपामीति स्वाहा।।

(3)

वेद्नीकर्म-विनाश पूजा।

पद्धरी छंद ।
यहु कम वेदनी दोय भेव,
ता वस जिय सुख दुख छहे स्वमेव।
यहु कर्मकाटि शिवथान पाय,
ते सिद्ध नमूँ मन वचन काय॥ १॥

अँहीं वेदनीकमेरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा॥

जव साता कर्भ उदै जु होय, रागी जिय सुख माने हु सोय। यहु कर्म काटि शिवथान पाय, ते सिद्ध नमूँ मन वचन काय॥ २॥ ॐहीं सातावेदनीकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निवेपामीति स्वाहा ॥

> जव उदै असाता होय आय, रागी मोह-वश थिरता न पाय । यहु कर्म घाति शिवथान होय । ते सिद्ध नमूँ मन वचन जोय ॥ ३ ॥

ॐहीं असातावेदनीकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्क-पामीति स्वाहा ॥

> ये कर्म मोह-वल सुफल दाय, विन मोह विफल इन उदं थाय। सुख-दुख-दायक ये स्वाँग धारि। यह कर्म जयो ते जगत तारि॥ ४॥

ॐ हीं वेदनीकर्मराहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

(8)

मोहनीकर्म-विनाश पूजा। कडखा छंद।

मोहने जगतके जीव सद जय छये, जड़ विषें ममत्त सवकों करायो । जीव भी मोह-वश आपदा भोगके, नृत्य करि चार गति देखि आयो ॥ इन्द्र धरनेन्द्र चकी सर्वें मेहकी, यो मोह जातें जयो धन्य ते जन भये, अर्घ छे चर्ण ताके जजें ही ॥ १ ॥ ॐहीं मोहनीकर्मरहिताय सिद्धपरमेछिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

कोध-वश आप उर दाहि अनिकों दहै, नाहिं वहु काललों संग छोरै। रेख पापाणकी कोध अनन्तानको, यो रहै धर्म ते नाहिं जोरै। जीव सव जगतके जेर याने किये, मोक्ष-मग रोकि मद आप छायौ। तासकों घात शिव राह लीन्हीं सरल, छाँडि भव-गैल सिधथान धायौ॥

ङँ॰हीं अनन्तानुवंधिकोधरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

> मान अनन्तान थंभ भयो पापाण ज्यों, फूटि है, नेक नहीं नमन ठानै । या जदे जीव टेड़ो रहे अकाड़िकें, वायकी न्याधि ज्यों रीत आने । जीव सव जगतकें । । ३ ॥

ॐहीं अनन्तानुवंधिमानरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घे निर्व-पामीति स्वाहा ॥

कर्म माया उदै जीव परकों छछै, वाँसजड़ त्यौं हिये गाँठि सारै। वचन ओते कहै दोप सारे छहैं। याहि वस जीव त्रक राह धारै। जीव सव जगतके।। ४॥

ॐहीं अनन्तानुत्रंधिमायाराहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

> लोभ अनन्तान-वस जीव निज माणदे, नाहिं परभावसों प्रीति मोरै। वरन मंजीठ ज्यों ठाम नाहीं तज, याहि वस जीव भव माहिं दोरे। जीव सब जगतके०॥ ५॥

ॐहीं अनन्तानुवंधिलोभरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपां-मीति स्वाहा ॥

चौपाई ।

या वस जीव अनन्ते काल, आपा-परको लयो न ताल । यह शिव-मारग घातनहार, याकों हरे सिद्ध निरधार ॥ ६ ॥ ॐहीं अनन्तानुत्रंधिरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्त्राहा ॥

दल-रेखावत क्रोव सु जान, अमत्याख्यान संजमकी हान । यार्की हन यहा भट सोय, ते सिद्ध पूज सब सिध होय ॥७॥ ॐहीं अमत्याख्यानकोषरीहताय सिद्धपरमेष्टिने अर्घ निर्व-पामीति स्वाहा ॥ मान अमत्याख्यान सु भाव, अस्थि-थंभवत याकौ दाव। याकौं हुनै महाभट सोय, ते सिध पूजै सव सिध होय।।८॥ ॐहीं अप्रत्याख्यानमानरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्व

माया हिरनसींग-वल जिसी, सूधी होय ज्ञानमें फसी। याकों हने महाभट सोय, ते सिध पूजे सव सिध होय।।९॥

ॐहीं अप्रत्याख्यानमायारहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपा-मीति स्वाहा ॥

क्रोभ कसूँभ-रंग सम जान, याके उदै चाह परमान । याको हुनै महाभट सोय, ते सिध पूजे सव सिध होय ॥१०॥ ॐहीं अप्रत्याख्यानहोभराहिताय सिद्धपरमोछिने अर्ध निर्वपा-मीति स्वाहा ॥

अहिल छंद।
ये चारों भट जान अमत्याख्यानके,
हानि करें अनुव्रत तनी दुख थानके।
याकों हिन सिध भये लोक मंगल लयो,
तिनकूँ अर्घ चढ़ाय जजों भव धनि भयो॥
ॐहीं अम्रत्याख्यानरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वेपामीति
स्वाहा॥

वेसरी छंद।

मत्याख्यान रेख-रज जानौ, क्रोध यहै मुनिपदको हानौ । याकौं घातै सो शिव पावै, लोकपूज सिध नाम कहावै ॥ ॐहीं प्रत्याख्यानकोधरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

काष्ट्रंथभवत नरमी जामें, प्रत्याख्यान गान वल तामें। याकों घाते सो शिव पावै, लोकपूज सिध नाम कहाँवै॥

ॐहीं प्रत्याख्यानमानरहिताय सिद्धपरमेछिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

मीदृर्सांगवत माया सोई, प्रत्याख्यान चारमें होई। याकों वाते सो शिव पावे, लोकपूज सिध नाम कहावे॥

ॐहीं प्रत्याख्यानमायारहिताय सिद्धपरमेछिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

मत्याख्यान लोभ केसरसो, ताके उदै जीव अघ करिसो। याकों चाते सो शिव पावे, लोकपूज सिध नाम कहावे॥

ॐही प्रत्याख्यानलोमरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्वे निर्वपामीति स्याहा ॥

दोहा ।

चौ भट मत्याख्यानके, इन थिति सब व्रत हानि । इनकों सयकरि सिध भये, ते गूजों अग्र भानि ॥ ॐहीं प्रत्याख्यानकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्टिने अर्घ निर्वपामीति स्याहा ॥

> पद्धरी छंद। संड्वलन-त्रोध जल-रेख जोय, याके अँश केवल-गम्य होय।

मुनिहू पै जोर करै सुजान, याकौं इति सिध पायो स्वधान ॥ ॐहीं संज्वलनकोधरहिताय सिद्धपरमेछिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ संज्वलनमान थंभ वेत्र जोय, वड पदको घातै मंद होय। मुनिसे पद याते जेर जानि, याकों इति सिध पायौ स्वथान ॥ ॐहीं संज्वलनमायारहिताय सिद्धपरमेष्ठिन अर्घ विर्वपामीति स्वाहा॥ माया संज्वलन दृपसींग जीय, मुनिवरमें वैठी दीन होय । मारग शिवके नहिं देय जान, याकों हति सिध पायौ स्वथान ॥ ॐहीं संज्वलनमायारहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा॥ रॅंग पतॅंग जेय संज्वलन-लोभ, जिन पाड्यो शिवमग माहि छोभ । ताकों दल निजरें नाहिं जान। याकौं हति सिध पायौ स्वथान ॥ ॐहीं संज्वलनलोभरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घे निर्वपामीति स्वाहा॥ ए संज्वलान भट चार जोय, जिन विन इन वल पावै न कोय।

ये यथारुयात मग-हरनवान ।

इनकौं हत सिध पायो स्वथान ॥

ॐहीं संज्वलनरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा चाल-सुन भाईरे हाँसि उदै उर हास्य होय, सुन भाई रे। संजमकी परिहार, चेत मन भाई रे । याकों घाति जु शिव गये, सुन भाई रे । सिद्ध जजों भवतार, चेत मन भाई रे। ॐहीं हास्यकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ रित प्रकृतिके जोरसौं सुन भाई रे। पुद्गल सदा सुहाय, चेत मन भाई रे। याकों याति जु शिव गये, सुन भाई रे । ते सिध सेऊँ भाय, चेत मन भाई रे॥ ॐहीं रतिकर्मरहिताय सिद्धपरमोष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ अरति कर्मके जोरसौं सुन भाई रे। अरति वस्तुर्सां होय, चेत मन भाई रे। याकीं हरि शिवथल गये, सुन भाई रे। ते सिध-थुति सिध होय, चेत मन भाई रे ॥ ॐहीं अरतिकर्मरहिताय सिद्धपरेनेष्ठिने अर्च निर्वपामीति स्वाहा ॥ शोक कर्म जब वल करे, सुन भाई रे। परिनति शोक कराय, चेत मन भाई रे। याकों घाति जु सिथ भये, सुन माई रे। पूर्नों सो चित ल्याय, चेत मन भाई रे॥ अँही शोककर्मगहिताय सिद्धपरमेष्टिने अर्व निर्वपामीति स्वाहा ॥ भय कर्म उदय जब होय, सुन भाई रे। तब जिय उर कंपाय, चेत मन भाई रे। याकों घाति सु सिध भये, सुन भाई रे। पूजों सो चित ल्याय, चेत मन भाई रे।।

ॐहीं भयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने 'अर्घ' निर्वपामीति स्वाहा॥ कर्म जुगुप्सा वल उदै, सुन भाई रे।

पर छिख छहै गिछान, चेत मन भाई रे। ताकों तिन घात्यो सही, सुन भाई रे। पूजों सो चित ल्याय, चेत मन भाई रे।

ॐक्षीं जुगुप्साकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वेपामीति स्वाहा ॥

> पुरुष वेद जव वल करै, सुन भाई रे होय नारि उर चाह, चेत मन भाई रे। या हत तिन शिव पद लहाो, सुन भाई रे। पूजों सो शिवथान, चेत मन भाई रे।।

ॐहीं पुरुषवेदरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥
वेद ज स्त्रीके उदै, सुन भाई रे ।
पुरुष चाह उर होय, चेत मन भाई रे ।
याकों हिन जे ज्ञिव गये, सुन भाई रे ।
ते पूजों सिध जोय, चेत मन भाई रे ।
ॐहीं स्त्रीवेदरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

वेद नपुंसकके उदै, सुन भाई रे। नर तिय जुगपत भाय, चेत मन भाई रे। ताकौं घाति जो शिव गये, सुन भाई रे । पूजों सो सिध आय, चेत मन भाई रे॥ ॐहीं नपुंसकवेदरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ ये नव कर्म हास्यादि हैं, सुन भाई रे॥ शिवमग रोकन हार, चेत मान भाई रे। इन हरि जे शिव- थल गये, सुन भाई रे। अर्घ जजौं सिध सार, चेत मन भाई रे। ॐहीं हास्यादिकनवकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घे निर्वेपामीति स्ताहा ॥

अदिल् ।

मिध्या-वश पर आप एक कर जानिया, चौ गति घरि घरि स्वांग आप करि मानिया। याके उदे अज्ञान मोक्षवांछा तजी,। ताकों हत सिध भये अर्घ जाकों जजी। क्रिंहीं मिथ्यात्वकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्टिने अर्थ निर्वपामीति स्वाहा।

जोगीरासा।

मिश्र मिथ्यात उदं जियके उर, द्विविधि स्वांग सो होवै। नाहिं जथावत सम्यक जाके, नाहिं मिथ्यात सु जोवे । या वश जीव अभय नहीं होने नाहिं मोक्षपद पाने । यार्कों घाँत सो शिव-परने ताकों अर्घ चढ़ावै ॥

· ॐहीं मिश्रमिथ्यात्व कर्मरहिताय सिद्धेपरमेष्ठिने अर्घ निर्व— पामीति स्वाहा ॥

सम्यकपरकति कर्म उदैतें, क्षय-उपभम दिवृ हो ही ।
देव-धर्म-गुरुमें अपनायत, दृष जिन सुखदा सो ही ।
शांतिनाथ जिन शांति करत हैं, ऐसी भाँति विचारे ।
याकों घात करे सो सिध हैं, सो है शरण हमारे ॥
ॐहीं सम्यक्ष्रकृतिमिथ्यात्वरहितासिद्धप्रमेष्ठिने अर्घ निवपामीति स्वाहा ॥

दर्शनमोह तनी थिति कोड़ा, कोड़ी सत्तर होई ।
चारितमोह तने वश संजम, धार सकैं नहिं कोई ।
यो ही मोह महाभट या वश, जीव जगतको वासी ।
याकौं धाति गये शिव—थानक, ते पूजौं थिति भाषी ।।
ॐ हीं दर्शनमोहनीकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

(4)

आयुष्कर्म-विनाश पूजा। गीता छंद।

आयु-कर्मवशाय आतम, खोड़ ज्यों तनमें रहै।
नर-देव-नारक-पशूकी थिति भोगके वपुकों जहै।
विन आयु पूरी खिरत नहिं तन, भोग सुख दुख बावरे।
यहु आयु कर्म हिर गये शिवपुर, ते जजों किर चावरे॥

ॐ हीं आयुष्कर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घे निर्व-पामीति स्वाहा ॥

देव आयू उदें तव तन, देवमें थिति जिय करें।
तिथि भये पूरी एक पल तिस, ठाम निह थिरता घरें।
किर है उपाय अनेक विधि, सौं-लगे नाहीं दावरे।
यहु आयु कर्म हरि गये शिवपुर, ते जजों किर चावरे।
ॐ ही देवायुप्यकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्थ निर्व
पामीति स्वाहा॥

मनुष आयु वशाय आतम, तन विषें सुख दुख भरै।
पूरी भए थिति एक छिन फिर, तहँ नहीं धीरज घरै।
रैन दिन वर्षाऽह गर्मी शीत नाहिं लगावरे।
यह आयुकंमै०॥

ॐ हीं मनुष्यायुष्कर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्व-पामीति स्वाहा ॥

आयु तिर्यक् कर्भके वश जीव, पशु तनमें वॅध्यो । पंच थावर विकल त्रय पं, चेन्द्रि द्वय विधि हो सँध्यो । लहे दुख वहु शीत गरमी, भगन नाहिं उपावरे । इह आयु कर्म० ॥

र्क्ष ही निर्वगायुष्कर्मरहिताय सिद्धपरमेष्टिने अर्वे निर्वपा-मीति स्वाहा ॥

पाप परिनाति टान नृककी, आयु वश आतम पन्यो । तुख सहै छेदन-भेदनादिक, तहन ताहिनमें फिन्यो । निहं कोइ एक उपाय दीखै, आयु वश जह जावरे। यह आयु कर्म० ॥

अँ हीं नरकायुष्कर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्व-पामीति स्वाहा॥

इम कर्म चारों आयु हरि विन, काय त्रिभुवनपति भये । त्रय वातमें तिन वेढ़ि तिष्ठै काय घरनेतें गये । ऐसे अनन्तानंत सिध इक, एक सिद्ध मैं राजि हैं । पूजों अरघ धरि हरष उर मैं सिद्धिके फल्ल काज है । ॐ हीं आयुष्कर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्व-पामीति स्वाहा ॥

(६)

नामकर्म-विनाश पूजा ।
् चौपाई।
नज्वै तीन नाम भट जोय,
या वश जीव स्वांग बहु होय।
याकोँ हतैं बिना शिव नाहिं,
हत्यो नाम ते सिद्ध कहाहिं।

ॐ हीं त्रिनवतिनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्व-पामीति स्वाहा ॥

> ्करड़ी परकृति जब बल करे, जीव तबैं तन काठौ घरे।

याकों इरि शिव थानक लहाो, तिनकों अर्घ जजौं नित ठयो ॥

क ही कठोरकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीिक स्वाहा ॥

नरम करम तव ही वल करें, सो जिय काया मृदु अति धरें। यामें विस जिय सुख दुख पाय, याकों हरें सिद्ध थल जाय॥

र्कं ह्यां मृदुकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्वे निर्वपामीति स्वाहा ॥

> उप्ण कर्म-वश आतम भयो, तव तन उप्ण रूप घर लयो। याम विस जिय सुख दुख पाय, याकों हरे सिद्ध धळ जाय।।

ॐ ही उप्णक्मीहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्व निर्वपामीति स्वाहा ॥

> शीत शरीर टर्ड जिय सोय, ताके शीन करम वक होय। यामें विस जिय सुख दुख पाय। याकों हरें।।

ॐ हीं शीतकमेरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने—अर्व निर्वपामीति स्वाहा ॥

हलको तन जाकै है सही, हलकी प्रकृति उदै तिन लही। यामैं वसि०॥

ॐ हीं लघुकर्मप्रकृतिरहितायसिद्धपरमोष्ठिने अर्ध निर्वपामीतिः स्वाहा ॥

> भारी तन पानै जिय सोय, ताकै भारि कर्म रस होय।

यामैं वसि० ॥

ॐ हीं गुरुत्वप्रकृतिरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वेपामीति स्वाहा ॥

रूखी प्रकृति उदै जब होय, जीव धरै तन रूखो सोय । यामैं वसि० ॥

ॐ हीं रूक्षप्रकृतिरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

कर्म चीकनो जब रस देय, ताकै उदै चिकन तन छेय।

यामें वसि०॥

ॐहीं स्निग्धकर्मरहिताय सिद्धपरमोष्ठिने अर्घे निर्वपामीति स्वाहा ॥ दोहा ।

खाटी प्रकृति उदै थकी, खाटो तन जिय पाय । ताकौं घात रु सिघ भये, पूजौं अर्घ चढ़ाय ॥ ॐ हीं आम्लकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्ध नि॰ स्वाहा ॥ मिष्ट कर्म वल जब कहें, मधुर काय तव पाय । ताको घात रु सिध भए, पूजों अर्ध चढ़ाय ॥ ॐ हीं मिष्टकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्ध निर्वेपामीति स्वाहा ॥

कड़क कमें रस दे तँब, जीव कड़क तन पाय । ताकों घात रु सिध भए, पूजों अर्घ चढ़ाय ॥ ॐ हीं कटुकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्टिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

उद्दे कसायल कर्मके, काय कसायल थाय । ताकों हिन शिवथल गये, पूजों अर्ध चढ़ाय ॥ ॐ हीं कसायलकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्थ निर्वपामीति स्वाहा ॥

काय तिकत जिय तब धरै, तिकत कर्म रस थाय । ताकों घात रु सिध भये, पूजों अर्घ चढ़ाय ॥ ॐ हीं तिक्तकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्टिनें अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

सोरठा।

छाङकर्म रस होय, तब जिय सुर्ख शरीर छे। याकों याते सोय, ते सिध पूजों अर्श्नसों ॥ ॐ हीं अरुणकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्टिने अर्थ निर्वपामीति रशहा॥ हारेतकर्म फल जोय, काय सवज ताकी वनै । याकौं घातै सोय, ते सिध पूजों अर्घसौं ॥ ॐ हीं हरित्कर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

रयामकर्म फळ होय, तव जिय तन कालो लहै। ताकों घाते सोय, ते सिध पूजों भावसों॥ ॐहीं स्यामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा॥

श्वेतकर्भ वल्ल जोय, उज्जल तन तव पाइये । ताकों घाते सोय, ते सिध पूजों भावसों ॥ . . ॐ हीं श्वेतकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

पीतकाय तव होय, पीतकर्म तहँ बळ करै। ताकों घाते सोय, ते सिध पूजों भावसो ॥ ॐहीं पीतकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

वीरजिनंदकी चाल।
कम सुगंध उदे वने जी, तन आकार सुगंध।
ताकों हिन शिवथल गये जी, काट कम दुख फंदजी—
माई, सिद्ध सबै सुखदाय।
ॐहीं सुगंधिकमेरिहताय सिद्धपरमेष्टिने अर्घ निर्वेपामीति
स्वाहा॥

दुर्गंघ तन ताको वनै जी, उदै दुर्गंघ कर्म होय । ताकों हिन शिवधल गये जी, मन वच पूजों सोय जी— भाई, सिद्ध सर्वे सुखदाय ॥ ॐहीं दुर्गंघकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वेपामीति स्वाहा ॥

अहिल छंद।
अस्थि नसा नाराच वज्रके जो छहै,
वज्रहपभनाराच काय ताकी कहै।
एह काय सो पाय मगन है के रहे,
इस हिं काटि सिंघ भए जजें तिन अब दहै।।

ॐहीं वज्रवृपभनाराचसंहननरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घे निर्व-पामीति स्वाहा ॥

> कीली अस्यि सु दोय, वज्रकेसे लहैं, वज्रनराच सु सहनन ताकों श्रुति कहै। एह काय सो पाय मगन है के रहे, इस हिं काटि सिघ भये जजें तिन अघ दहै॥

ॐहीं वज्ञनाराचसंहननरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्व निर्वपामीति स्वाहा ॥

> वज़मई हैं हाड़ कर्म ता होने उदै, वड़ा अरु नाराच वज़त हो जुदै। एद काय सो पाय मगन हैं के रहै। इस हिं फाटि सिध भये जज़ें तिन अय दहें॥

ॐ ह्रीं नाराचकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीतिः स्वाहा ।)

कील नसें अरु हाड़ वजके ना कहै,
अर्ध कीलिका संधि निषे दिड़के रहै।
एह काय सो पाय मगन है के रहै,
इन हिं काटि सिध भये जजैं तिन अघ दहै।।
ॐ हींअर्धनाराचकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्ध निर्वपामीतिः
स्वाहा।।

कीलीरहित जु हाड़, संधि ता तन विषें, अस्थि तनों बहु गाढ़, परस्पर धुनि अखे। एह काय सो पाय, मगन ह्वैके रहै। इन हिं काटि सिध भये, जजैं तिन अघ दहै।

ॐ हीं कीलककर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्धे निर्वपामीतिः स्वाहा ॥

जुदे जुदे हैं हाड़, नसिनतें दिद भये, फाटिक तन तिन भार, रसी जिमि करि दये। एह काय सो पाय मगन हैके रहें, इन हिं काटि सिध भये, जजैं तिन अध दहे॥ ॐ ही स्फाटिककर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्थ निर्वपामीतिः स्वाहा॥

बाल-जोगीरासाकी । अंगोपांग सुघाट सकल अँग, जैसो जिन धुनि गायौ 🖡 सुन्दर काय सुहाँव सवको, पुण्य जोगतें पायौ । संसथान समचतुर महाठिग, तामैं जीव छुभानो । यो ठिग जान हत्यो धन ते सिध, पूजों अरघ चढ़ानो ॥ ॐ हीं समचतुरस्रसंस्थानरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अंधे निर्वे पामीति स्वाहा ॥

गीता छंद।

ममंडलनिगरोद जाके, कर्मको रस होय है।
सो काय ऊपर होय दीरघ, हेटते कुश होय है।
हाँ वैट आतम महा सुख धरि, वंधकी खबरे नहीं।
तब चेतकर हरि कर्म या टिग, पहुँचि हैं शिवकी मही।।
कें हीं न्यमेश्वपरिमंडलकमिहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्ध निवर्धमिति
स्वाहा।।

जब उदे स्वातिककर्भ ठान, जीव ऐसे तन वँघै।
जो उहं ऊपर नसें दीरघ, हेठकी कानीं सँधै।।
हाँ वंठ आतम महा सुख धिर, वंधकी खवरें नहीं।
तव चेतकर हिर कर्म या ठिंग, पहुँचि है शिवकी मही।।
क्रेंहीं स्वातिकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्टिने अर्थ निर्वेपामीति स्वाहा।।
जब कर्म जुब्जक देय निज रस, काय तव ऐसी छहं।
उदर पीट उतंग जाके, गाँठ बहुती तन रहे।।
हाँ वंठ आतम महा सुख धिर, वंधकी खबरें नहीं।
तव चेतकर हिर कर्म या ठिंग, पहुँचि है शिवकी मही।।
क्रेंहीं कुब्जवकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्थ निर्वेपामीति स्वाहा॥

कर्म वावन उदै आतम काय, छघु पावै सही।
तिस माँहि आतम बैठि हरले, कर्म-वश सव बुधि दही।
हाँ रहे काल अनादि आतम, वंधकी खबरें नहीं।
तव चेतकर हरि कर्म या ठिग, पहुँचि है शिवकी मही।।
काँहीं खबीकृतिकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीतिः

स्वाहा ॥

कर्म हुंडक तने वश जिय, विकट तन रूँड मुँड छहै। तिन देखि अनिको अराति उपजे पापवश को ना चहै। हाँ रहे काळ अनादि आतम, वंधकी खवरें नहीं। तव चेतकर हरि कर्म या ठिग, पहुँचि है शिवकी मही।। ॐहीं हुंडककर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा॥

वेसरी छंद।

देवतनी गति ताको कहिये, देव अकार धार शुभ रहिये। ऐसी प्रकृति हरी शिव पाई, ते सिध जजौं सु अर्घ चढ़ाई॥

ॐहीं देवगतिकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्टिने अर्घ निर्वेपामीति स्वाहा॥ माजुष तन धर जग विचरावै, सो ही गति माजुषकी गावै। ऐसी प्रकृति हरी शिव पाई, ते सिध जजौं सु अर्घ चढ़ाई॥

ॐहीं मानुपुगतिकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

तिरजँच तन धरि भू विचरावै, सो तिरजँच गति नाम घरावै।। ऐसी प्रकृति हरी शिव पाई, ते सिध जजौं सु अर्घ चढ़ाई।। ॐहीं तिर्यगातिकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा॥ नरकिवेष त्रकको तन होवै, सो त्रक गतिको वँधन सोवै।
ऐसी प्रकृति हरी शिव पाई, ते सिध जजौं सु अर्घ जढ़ाई॥
ॐहीं नरकगतिकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाह॥
चौपाई।

अनि तन छाँड़ि देवमें आत, राह विपै सो उदै करात । सो सुरपूरव जानो सही, ता हति छई शुद्ध शिवमही ॥ ॐहीं देवगत्यानुपूर्वीकर्मरीहताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति

स्वाहा ॥

अनि गति छाँड़ि मनुष उपजाय, अंतर विषे सु उदै कराय। सो मनुषानुपूरवी सही, ता हति छई शुद्ध शिवमही॥ ॐहीं मनुष्यगत्यानुपूर्वीकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्व-पामीति स्वाहा॥

जो अनि गति तज पशुतन पाय, आवै राह उदै सो थाय । सो तिरजँचानुपूर्वी सही, ता हति छही शुद्ध शिवमही ॥ ॐ हीं तिर्यगत्यानुपूर्वीकर्मरहिताय सिद्धपरमेछिने अर्घ निवपा-मिति स्वाहा ॥

अनि तन छाँड़ि नरक जो होय, सो कर्म राह विपे वल जोय। नरकपूर्वी जानो सही, ता हति लही शुद्ध शिवमही ॥ ॐ हीं नरकगत्यानुपूर्वीकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्टिने अर्व निर्वपा-मीति स्वाहा॥

गीता छंद । जा कम ओदारीकर्ने पुद्गल प्रमान् जो छहै । तनपिंडमें निय आय नियसे, सो उदारिक तन कहैं । या कर्म वश नर-पशू आये, जोर निहं वश रागकै । इस घाति पाई नारि शिवसी, सिध जजौं वड़ भागके ॥ ॐहीं औदारिककर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

वैक्रियक कर्म-वश यह पुद्गल, तासमें आतम रहे।
सो जान तन वैक्रियक यामें, देव त्रकको जिय लहे।
कोड पुण्यतें ले सुभग पुद्गल, पापतें दुखदा सही।
यह घाति कर्म वैक्रियक पहुँचे, जजों ते सिधकी मही॥
ॐ हीं वैक्रियककर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वेपामीति स्वाहा॥
कर्म अहरक उदे सेती, पुगल तैसो ही लहे।
ताको सपिंड अहारको तन, नृमल आति शोभा लहे।
यो होय रिधिधर महामुनिके, प्रमत गुनथानक सही।
तिन घाति शिवथल लयो ते धनि, जजों तिनकी सुध मही।
ॐ हीं आहारककर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वेपामीति
स्वाहा।।

जाति तैजस पुगलको पिंड, कर्म तैजस वल लहें । सो रहें सब जिय संग लगिकें, मोखमें नाहीं यह ॥ जो लहें तैजस दोय विधि मुनि ग्रुभाग्रुभ सो रिधि कही । ते छाँड़ि सकल स्वथान पायों, पहुँचि हैं सिधकी मही ॥ ॐ हीं तैजसकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा॥ ज्ञान द्रशन वेदनी गिन, मोह आयु जु नाम है। फिर गोत्र अरू अँतराय, आठों कर्म पुद्गल धाम है। ये होय इकटे भैंयो तन जो, कारमान वखानिये । हित तासकों शिवधान पायों, तेज जो धुित आनिये ॥ ॐहीं कार्माणशरीररहिताय सिद्धपरमेष्टिने अर्घ निर्वपाने मीति स्वाहा ॥

अडिहा।

है वंधान सरूप, पाँच विधि गाइये । गारा ईट दिवालविपें जिमि पाइये । त्यों तनमें पल हाड़, नसें वंधन सही । ते विधि हरि सिध भये, जजौं ते सिध मही॥

ॐहीं पंचप्रकारवंधनकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घे निर्व-पामीति स्वाहा ॥

सोरटा।

औदारिक तनमाहिँ, तैसो ही वंधन बने। सो हरि जिन शिव पाहिँ, ते सिध पूजों अर्धसों॥ ॐहीं औदारिकत्रंधनरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपाने मीति स्वाहा॥

विक्रियक वषु माहिँ, तैसी वंधन होत है। सो हरि जिन शिव पाहिँ, ते सिध पूजों अर्धसों॥ ॐहीं विक्रयक्रबंधनरहिताय सिद्धपरमेष्टिने अर्घ निर्वपान मीति स्वाहा॥

> अहारक होय शरीर, तेसी वंधन होत है। सी हिर शिव ले घीर, ते सिथ पूजी अर्थसीं॥

ॐहीं आहंारंकर्नर्धनरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वेपामीति स्वाहा ॥

र्तेजस होयं शरींर तैसों ही बंधान छे । सो हरि शिव छे वीर, ते सिध पूजों अर्धसौं ॥ ॐहीं तैजसबंधनरहिताय सिद्धपरमेष्टिने अर्ध निर्वपामीतिः स्वाहा ॥

कारमान तन पाय, तव तैसो बंधान हो। सो हरि शिवथल जाय, ते सिध पूजों अर्घसौं॥ ॐहीं कार्माणवंधानरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्ध निर्वपामीति स्वाहा॥

गीता छंद ।

होय पंच सँघात तन जिमि, भींतपर छेपन सही।
ति।मि तन विपें चहुँ ओर छिपटी, चामतें ग्रुभसी वही।
तन-मिन्द्रमें यहु धात गारो, छेप चाम सँघात है।
तिस कर्म हरि सिधथान पायो, ते जजों हर्रणत है।
ॐहीं पंचजातिसंघातरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा॥

होहा । औदारिक तनके विषें, जैसो होय सँघात । ताकों हिर हैं सिद्धंसो , तव शिवथानक पात । ॐहीं औदारिकसंघातरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपा-मींति स्वाहा ॥ वैक्रीयक तन जो लहें, होय तिसो संघात । ताकों हिर हैं सिद्ध सो, तव शिवधानक पात ॥ ॐहीं वैक्रियकसंघातरिहताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपा-मीति स्वाहा ॥

अहरक तनके संग ही, होय तिसो संघात । ताकों हिरे हें सिद्ध सो, तव शिवधानक पात ॥ ॐहीं आहारकसंघातरहिताय सिद्धपरेमीष्ठेन अर्वे निर्वेपान मीति स्वाहा ॥

तेजस्को जाके वपू, तैसो छाखि संघात । ताकों हिर हैं सिद्ध सो, तव शिवधानक पात ॥ ॐहीं तेजससंवातरहिताय सिद्धपरमेष्टिने अर्वे निर्वपामीति स्वाहा ॥

कारमान तन संघ जे, तव जैसो संघात । ताकों इरि हैं सिद्ध सो, तच शिवधानक पात ॥ ॐ हीं कार्माणसंवातरहिताय सिद्धपरमेष्ठिन अर्घ निर्वपामीति स्याहा ॥

चाल-वीरजिनेन्द्रकी।

जाित इकेन्द्री सी छई जी, ते ता ही होय ज्ञान । ता हारे मुख दुख छई जी, सो हर छे शिवधान-जी भाई, धर्म विना मुख नाँहि॥

अँगी एकेन्द्रियनातिकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्टिन अर्व निर्वपा-मीनि स्वारा ॥

अहिल छंद ।

क्षय उपशम दो इन्द्रीको तन पाय है।
कर्म दु इन्द्री नाम उदै तव थाय है।
ताही घारै सुख दुख ते तो पायजी।
याहि कर्म जो हरै सिद्ध सो थायजी॥

ॐहीं द्वीन्द्रियनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्धे निर्वेपामीति स्वाहा ॥

ते इन्द्रीको क्षय उपशम सो जिय छहै। जातें ते इन्द्री नामकर्म तहँ रस कहै। ताही धारै सुख दुख आतम पाय जी। याहि कर्म जो हरै, सिद्ध सो थायजी॥

ॐहीं त्रीन्द्रिय नामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

> चौ इन्द्रीके उदै जीव चौ अख वनै । ज्ञान तितो ही होय ओर चुधिको हनै । या वज्ञ जीव असंख्याते भवमें रहे । याकौं हरि सुध भये ताहि धुनि सिध कहें ॥

ॐहीं चतुरिन्द्रियनामकर्मरिहताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

> पचेन्द्री वश जीव नरक नर सुर वनै । जाति पशु भी होय कर्म-वश बुधि हनै ।

जैसो कर्म रस देय ज्ञान तैसौ छहै। याकों हरि सुध होय ताहि धुनि सिध कहै।। ॐहीं पंचेन्द्रियन।मकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्थ निर्वेपामीति स्त्राहा।।

गीता छंद ।

अंग आठ नितम्ब मस्तक, हाथ दुय पद उर सही।
फिर पीट मिल वसु जान तनमें, अरु उपँग श्रुति यों कही।
सो होय तीन शरीर माँही दोयके ये ना कहै।
इन घातिक शिवधान पहुँचे लोकत्रय मंगल ठहै।।
ॐहीं आंगोपांगनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्टिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।।

जो वन औदारीक तनमें अँग उपंग सहावने। सो जान औदारीक अंगोपांगकर्मतें पावन। इस तने वश सुख मान निवस्यो रोगकी खबरें नहीं। तिस वातिके शिवधान पहुँचे ते जजों मन वच ठही॥

ॐ हीं औदारिक-आंगोपांगकर्मरहिताय सिद्धपरंमछिने अर्थ निर्व-पामीति स्त्राहा ॥

विक्रियक-आंगोपांग कर्भके एदं सेती सो छहे। इक्क काय माँहि अनिष्ट पार्व देवके शुभसों रहे। ये हरप और विपाद वश जिय काल चिर इन वश रहे। जे याति निनकों गये शिवपुर ते जजा तहें थिए छहै॥

ॐ हीं वैंकियक-आंगोपागकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने निर्वपामीति स्वाहा ॥

जोलवधि-वल मुनि लहै अहरक तन महा हितदाय जी 🅕 तहँ होय अंगोपांग सुखदा कर्म वश सो पाय जी। सो अहार आंगोपांग सुन्दर पायकरि श्रेणी छहै। इस टारि धारि सुरूप अपनो शुद्ध करि सिध थल लहै।। ॐ हीं आहारक-आंगोपांगकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्व-पामीति स्वाहा ॥

ंचौपाई।

जो निज चाल सुभग उरवेय, ताकौ भली चाल रस देय । याभी भवमें राखनहार, या हति सिद्ध भये भवपार ॥

ॐहीं द्वाभगमनकर्मरिहताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वेपामीति स्वाहा ॥

अशुभ चाळ जो अपनी कहे, सो कर्म अशुभचाळ रस ळहै। याभी भवमें राखनहार, या हति सिद्ध भये भवपार ॥

ॐहीं अशुभगमनकर्भरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्व-पामीति स्वाहा ॥

ये पैंसट पिंड परकृति जान, चौथे थोक कहै भगवान । इनकों हाति शिवथानक पात, तिन सिध पाँय जर्जी हरपात ॥

ॐहीं पंचपष्टिपिंडप्रकृतिरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपा-मीति खाहा ॥

उदै अगुरुलघु कर्म सु जान, रहै जथारथ जिय तन ठान ।

ताकीं हाति पहुँचे शिव जाय, ते सिध जजों अर्धतें भाय ॥ ॐहीं अगुरुल्घुकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

सास उसास जीव जो छहै, ताकौं सास कर्म रस कहे । सो हर करि शिवथानक गये, ते सिध मन वच तन हम नये।

ॐहीं इवासोच्छ्वासकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वेपाः मीति स्वाहा ॥

उर्दे कर्म उपघात सु होय, ता तन ऐसे लच्छन होय। तातैं अपने तनकी घात, याहि कर्म घातैं शिव पात॥

ॐहीं उपघातकर्मरिहताय तिद्धपरमेष्ठिने अर्ध निर्वपामीति स्वाहा॥ पर तन हरन चहन तहँ होय, सो परघात कर्म वल-जोय । याकों हित पाई शिवनारि, ते सिध जजौं अरघ मद-हारि॥

ॐहीं परचातकर्मरिहताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ कर्म अताप उदें जब जोय, निज तन ज्योति श्रीत ग्रम होय ॥ सूर्य-विमान उदें यह जान, याकौं हिन पायो शिवथान ॥

भू हीं आतापकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्थ निर्वेपामीति स्वाहा ॥ निज तन शीत शीतदुति होय, सो उद्योत कर्म रस जोय । शशि-विमान आदिक वहु थान, याकों हर होय शिव जान ॥

अँद्या उद्यातकर्परहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वेपामीति स्वाहा ॥ गीता छंद ।

निरमान परकति दोय विधि हैं , थान अरु परमान जी । होय अंग उपंग निज थल, सो सथान निमान जी । फिर अंग-उपांग प्रमानतें हैं, सो प्रमान सु जानिये। तिज दोय विधि निर्मानकर्मिहें छहै शिववछ ठानिये॥ ॐहीं निर्माणकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपा-ति स्वाहा॥

'तहँ होय तीस रु चार अतिशय, समवशरण सुहावनो ।
फिर पंचकल्याणादि मंगल, जगतको सुख दावनो ।
तहँ होय तीरथ नाम परकति, जहाँ यह विधि थाय जी ।
तिज तासकौं शिवथान पायो, ते जजौं थुति लाय जी ॥
ॐ हीं तीर्थकरनामकमरहिताय सिद्धपरमेष्ठिन अर्थ नि०॥
चौपाई।

जिय संपूरन पावै काय, कर्म उदै परजापत थाय ।
याकौं हित पायो शिव थान, ते सिध जजों अर्घ शुभ ठान।
ॐ हीं पर्याप्तिकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ नि०॥
तन परजापत पूरि न छहै, अध वीचे परजाय सु जहै।
याकौं हित पायो शिव थान, ते सिध जजों अरघकरि आन
ॐ हीं अपर्याप्तनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति
स्वाहा ॥

इक तन स्वामी इक जिय होय, ताको प्रतेक नाम बल जोय। ताकों हरि पहुँचे शिव थान, तिनकों अरघ जजों हित ठान। ॐहीं प्रत्येकनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वेपामीति स्वाहा।। इक तनके वहु स्वामी जीव, ते साधारन उदै सदीव। ताकों हरि पहुँचे शिव थान, ते सिध जजी अरघ शुभ ठान। ॐ ही साधारणकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा॥

गमन सकति पावे जो जीव, कर्म उदै त्रस ताके कीव । ताकों हरि पहुँचे शिवधाम, ते सिथ पूजी शिवपद काम ॥

ॐहीं त्रसनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ जो थिर रहे गमनवल नाहिं, सो जिय थावर उर्दे सु पाहिं । ताकों हरि पायो ध्रुवथान, ते सिध जजों छाँड़ि उरमान ॥

ॐहीं स्थावरनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्टिने अर्व निर्वपामीति स्वाहा ॥

जो जिय आड़ किये रुक जाय, वादर कर्म उदै तहँ थाय । ताकों हरि पायो शिवधान, ते सिध जजों हरष उर आन ॥

ॐहीं वादरनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

वज्ञयकी भी रुके न जीव, ताके स्क्षम कर्म सदीव । ताकों नािश गये शिवधान, ते सिध पूजों अरघ सु टान ॥ ॐहीं स्क्ष्मनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्थ निर्वेपामीति स्वाहा ॥

णो निज शब्द भळो उर वेय, सुस्वर कर्म उद् तव देय। ताकों नाशि भये सुध धीर, ते सिघ जजीं भक्ति करि बीर ॥ अती सुस्वरक्षमरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्व निर्वणागीत स्वाहा॥ जब निज शबद भलो नहिं कहै, तब ही दुस्वर-कर्भ-रस लहै। ताकों नाशि भये सुध जीव, ते सिध जजों सु हरष सदीव ॥

ॐहीं दुस्वरकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ तनमैं शुभ छच्छन सुन्दरो, ताके उदै कर्म शुभ खरो। ताकों नाशि गये सुध धाम, ते सिध ज़र्जो हरषके काम ॥

ॐहीं शुभकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वेपामीति स्वाहा ॥
अशुभ चहत तन रूप न कोय, ताके अशुभ-कर्म-रस होय ।
ताकों हिन पायो निर्वान, ते सिध पूजों जै जै ठान ॥
ॐहीं अशुभकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वेपामीति स्वाहा ॥
सप्त धातु तनकी थिर रहे, ताके थिरकर्मको वल कहे ।
ते कर्म नाशि लयो सुध धाम, ते सिध जजों हरषके काम ॥

ॐहीं स्थिरकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा॥
सप्त घातु तनकी थिर नाहिं, तब ही अथिर-कर्म-रस टाहिं।
यहु हरि कर्म गये शिव होय, ते सिध पूजों मन वच जोय॥
ॐहीं अस्थिरकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपा-

मीति स्वाहा ॥

मानै जिय अब आदर भयो, तब आदेय कर्म-रस ठयो। ताकौँ नाशि भये शिवरूप, ते सिध पूजौं अर्घ अनूप ॥

ॐ हीं आदेयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपा-मीति स्वाहा ॥

जव कहँ जीव अनादर थाय, अनादेय तब परकति आय । ताकौं हति पायो शिवथान, ते सिध पूजों मन वच जान ॥ क ही अनादेयकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्टिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

अहिल छंद।
लव जिय आप सुभाग आप उर जानि है।
जदं कर्म जिय तव सुभागका मानि है।
याकों नाशि गये शिवधानकमें सही।
सो सिध पूजों भावसहित वसु द्रव लही॥
ॐ हीं सोभाग्यकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति
स्वाहा॥

जो जीव अपने भाग्यकों, उरमें भटो जाने नहीं।
दुर्भाग्यकर्म उदे सु ताके, तासतें इम चित ठही।
दोय कर्म जाके उदे तसो, भाव भी तसे वने।
यहु निक्षके शिवयान पायो ते जजों सुखदा वने॥
ॐ ही दुर्भाग्यकर्मरिहताय सिद्धपरमेष्टिने अर्व निर्वपामीति स्वाहा।
जो आपनो जस जगत माने, और जन शोभा कहें।
सो कर्म जस जाके उदे हैं, तासतें महिमा छहें।
इमि जान खुश है रह तनमें, वंश भेद न पाय है।
यहु निक्षिके शिवयान पायों, ते जजों सुखदाय है।।
ॐ ही यशःकर्मरिहताय सिद्धपरमेष्टिने अर्व निर्वपामीति स्वाहा॥
जस नाहि अपने। जगत माने, कह में अजसी सही।
तिस जीवके हैं अजसको चट, नासनें शोभा नही।
ये कर्म-परकित पाप हैं, सो तासनें या विधि वनी।

ते सिद्ध पूजों भाव शुभकर, तासने परकति हनी।।
ॐ हीं अयशः कर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा
नामकर्मके सुभट वहु विधि, स्वांग अति धारें सही।
गिन तिरानव तीन (१) आगे, जीव इन वश चिर गही।
यह नामकर्म निवार पहुँचे, छोक शिखर शिरोमनी।
ते सिद्ध पूजों अर्घ करिके, देहि शिव मो शिवधनी।।
ॐ हीं ज्यधिकनवतिनामकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।।

(७)

गोत्रकर्म विनाशपूजा । चाल जोगीरासा ।

गोत्रकरम है सूरजवंशी, भूपतिसो रिझवारी ।

ऊँच नीच ताके घर दौळत, सेवकसो अधिकारी ।

रीझे ऊँच करे बिन रीझे नीच दशा कर डारे ।

ऐसे कर्म हरिके शिव पहुँचे ते सिध शरन हमारे ॥

ॐहीं गोत्रकर्मरिहताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

नीच गोत्रके जीव उदेतें, नर्क पश्च बन आवे ।

मनुषविषे कुळ वैश्य रु ब्राह्मन, क्षत्री कुळ नहिं पावे ।

या कर्मके वश जीव परे सब, ते ही नीच कहाये ।

याकों हित शिवथान गये धनि, पूजों मन वच काये ॥

ॐहीं नीचगोत्रकर्मरिहताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा॥

गोतर ऊँच तने वल सेती, सुर नर जीव कहाने ।

नरक पश्चगति सुंदर नरमें, जीव कदे निह आवे ।

जो पश्च जीव रहे खुश तिन ही, जान महासुख वासो ।

ताकों तिज शिवधान गये धनि, पुजों किर सुख खासो ।

ॐहीं उच्चगोत्रकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिन अर्घ निर्वपामीति
स्वाहा ॥

(6)

अंतराय कर्म-विनाश पूजा। गीता छंद।

पंच विधि अँतराय ताने, जीव वीरज हरि छियो । तव वीर्य विन जिय निवल हैं के चारगति निज घर कियो ॥ ये महाभट अँतराय शिव मग, घातिके छलकों चहै । ताकों सुहति शिवधान पायो, जजे ताकों शिव लहै॥

ॐहीं पंचप्रकार-अंतरायकर्भरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्ध निर्वपामीति स्वाहा ॥

जब ते उद् अँतराय दान सु,-दान निय सो ना करें।
परभाव मोहित रहें निशिदिन, त्याग छाधि सो ना धरे।
इस कर्मके यश जीव ते करि, रहें सकति गुमाय जी।
ताकीं सु हति शिव लई जाकीं, नमूँ मन वच काय जी।

अंगी दानान्तरायकर्मरहिताय सिद्धपरमेहिने अर्घ निर्वपा-मीति साहा ॥ लंगिकी अँतरायके वश, जीव लाभ सु ना लहै। जो करें कष्ट जपाय सगरे, कर्मवश विरथा रहें। निहं जोर याको चल्ले इक लिन, दिनसो जगमें फिरें। ते जजों सिद्ध जु अर्ध घरिके, तिको या कर्मकी हरें।। ॐ हीं लामान्तरायकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिन अर्ध निर्वपामीति स्वाहां।।

भोगकी अँतरायके वश, भोग वस्तु ज ना मिले। जो मिले तो निहं भोग सक है, कर्म-वश नित ही वले। ते धन्य कर्म निवार ऐसी, भोग निज परनित कियो। ते सिद्ध पूजों अर्घ सेती, त्यागिकै निज भो लियो।। ॐ हीं भोगान्तरायकर्मरहिताय सिद्धपरमेछिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।।

रत्न भूपण नारि वस्तु सु, सुभग मन्दिर सोहना । इत्यादि जो उपभागके, द्रव मिल्ले शुभ मन मोहना । सो सके नाहीं भोग करि जिय, उदै कर्म उपभाग है । जो गये याकों छाँदि शिवपुर, जजाँ तहाँ नाहें रोग है ॥ ॐ हीं उपभागेन्तरायकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्व-

पामीति स्वाहा ॥

वीर्य कर्म अँतराय जाके उदै, वस्र जिय ना लहै।
पुरुषार्थ तामें होय तुछ नहिं, दीन शक्ति सु जुत रहै।
नहिं जोर यापै चले काको, महावल धर कर्म है।
हर तासकों शिवथान पायो, जजों ते सुध धर्म है।

ॐहीं वीर्यान्तरायकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा।
ये पाँचों अंतरायने, वीरज आतम छाय।
इनकों हर शिवधक गये, सो सिध पूजों भाय॥
ॐहीं पंचप्रकार-अंतरायकर्मरहिताय सिद्धपरमेष्टिने अर्घ निर्वपामीति स्वाहा॥

जयमाल।

दोहा।

इन क्रमेन भट जग जयो, ते धनि ये खय लाय । या विधि वंध उदे सता—हानि सिद्ध थल पाय ॥ १॥ वेसरी छंद ।

शत परकति इक्सें अड्ताकी, वंधतनी शत वीस समाकी ॥
सत्त वाईस उदेकी भाई, या विधि सय करिके शिव पाई ॥२॥
जीव अनादि मिध्यापुर माहीं, वंध उदे सत्ता-वश थाही ॥
तव कोई काल लविध दिग आवे, सो इमि कर्म छाँड़ि शिव जावे ॥
तव जिय दूजे धानक होवे, तह सतकी परकति निहं खोवे ।
वंधविष पोड़श भट तोरे, उदे तने भट पंच मरोरे ॥ ४ ॥
तव जिय निश तीजे पुर आवे, तोभी वहु भट साथ धकावे ॥
सत्ताके सव ही भट छारे, वंध तने पत्तीस निवारे ॥ ४ ॥
उदे तने नव स्रा खोवे, फेरि जीव समदृष्टी होवे ।
वहुत स्र तहाँ सँग आवे, सत्ता सुभट सवे ही पावे ॥ ६ ॥
वंध तने निहं सुभट खपावे, उदं तनी इक जोधा डावे।

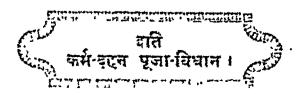
फेरि नाश पंचम पुर आयो, सत्तासी इक सूर खपायो ॥ ७ ॥ वंधविषे दस परकति तोरी, सन्नै उदै विषे तें मोरी ॥ फेरि जीव मुनिपदकों धायो, सत्त तनो इक सूर खिपायो ८ चार शूर वँधके खय कीने, वसु जोधा सु उदके छीने। तो भी सुभट संग वहु आये, तब चेतन सप्तम पुर धाये।। ९॥ सत्ता सुभट गैल है सारे, वंध तने जोधा पट मारे । उदै तने पँच शहा जीते, तो भी कर्म नसें नहिं चीते ॥ १०॥ सो जिय अष्टम पुरको आयो, सत्ताके वसु भट जय धायो। वंधविषें कोइक भट डाप्यो, उदै चार भटको मद मारचो।।११॥ क्षायकश्रेणी सो भट जावे, उदै तने यह षट भट ढावै। सो उपश्रम ग्यारह में खोंचे, जो दुय भट इसरह जहाँ धोंचे १२ फिर नवमें पुर आयो भाई, सत्ता शरू सबै सँग धाई। द्यार छतीस वंधके खोये, उदै तने पट जोधा वोये ॥ १३ ॥ फिर दशवें पुर आयो शूरा, पीछे करम लगे दुख पूरा। सत्ता शर छतीस न आये, उदै तने पट शर नसाये।। १४॥ पंच वंधकें जोधा मारै, इमि करि दशवें पुरहिं पधारै। ह्यां सत्ताको इक भट तोरचो, पोडश भट वंधको मद मोऱ्यो १५ उदै तनो इक जोधा खोयो, तव आतम द्वादश पुर जोयो। चकँघि ग्यारमो गढ़ यहँ आयो, मोहतनो सब क्रुळ कहळायो १६ फिर यहँतें जिनपदमें धाये, पोड़श भट सत्ताके ढाये। **उदैविषें** पोड्य ही मारे, वंध सुभट पे नाहिं निहारे ॥ १७ ॥ तब अजीग दीपमें आये, सत्ताके सव भट सँग धाये ।

खंदे तने भट तीस मरोरे, बंध एक भट सो यह तोरे ॥ १८॥ तुछ थितिकरि शिव सहज विराजे, तीन लोक नायक थिरवाजे । सत्ता सुभट पचासी खोये, खंदे तने द्वादश भट वोये ॥ १९॥ ऐसे आतम शिव जो जावे, या विधि कंमबंधको ढावे । छे सुख काल अनंता राजे, ते नितं पूजे भिव शिवकाजे ॥२०॥ सिधथल सिद्ध अनंते जानो, इकमें सिद्ध अनंते मानो । सब ही सम सुख ह सम ज्ञानो, विन मूरति चेतन भगवानो २१ जो सिधसुख, सो जगमें नाहीं, जग दुख जे नहिं सिद्धन ठाहीं। उनके सुखकी को किव गावे, जाने सो सब कर्म खिपावे ॥२२॥ इनको सेथे पद इन पावे, अधिक कहा फल मुखतें गावे । घो फल सुनि हम मन ललचायो,तातें टेक छाँडि शिर नायो ।२३॥ इन्हा ।

धोय करम-रजं शिव वरी, महा सुभटता छाय । ते सिघ सबको सरन है, और कहा धृति भाय ॥ २४ ॥ ॐ हीं णमा सिद्धाणं सिद्धपरमेष्टिने महार्घ निर्भपामीति स्वाहा ॥ दोहा ।

नमों सिद्ध सिघ कार्ने, भक्ति महा मन लाय। पूर्ने सो शिव-सुख लंहे, और कहा अधिकाय॥ २५॥

इत्याशीर्वादः।



परम पवित्र जैन साहित्यके प्रसारका एक नवीन उपाय ।

सिर्फ ५०० स्थायी ग्राहकोंकी आवश्यकता।

हिन्दी-जैन-चरित-माला।

इसमें जैनाचार्योंके बनाये अच्छे २ संस्कृत ग्रन्थ हिन्दी भाषा-में अनुवाद कराकर प्रकाशित किये जाते हैं। आठ आने प्रवेश फी जमा करा जो महाशय इसके स्थायी ग्राहक बनते हैं, उन्हें चरितमालाकी सब पुस्तकें पौनी कीमतमें दी जाती हैं। अब तक इस मालामें नीचे लिखी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

- १. यशोधर-चरित—संस्कृतमें यह वड़ा ही मुन्दर काव्य है। उसीका यह हिन्दी अनुवाद है। इसमें यशोधर महाराजका चारित वड़ी मुन्दरतासे लिखा गया है। इसके पढ़नेसे हृदयमें करुणाका प्रवाह वह उठता है। वड़ी मुन्दर पुस्तक है। कीमत चार आना।
- २. नागकुमार-चरित—इसके मूळ ग्रंथकार उभय-भाषा-कवि-चक्रवर्ती श्रीमिक्षपेणसूरि हैं। नागकुमार कैसा कर्तव्य-परायण पुरुपरत्न था, कैसा परोपकारी और शूरवीर था, इस वातका वडी अच्छी तरहसे इस पुस्तकमें वर्णन है। कीमत छह भाना।
- **१. पवन**दूत (काञ्य) कालिदासके मेघदूतके ढंगपर इसमें पवनको दूत बनाकर, उज्जैनके राजा विजय नरेशकी विरहकथा उन्होंके मुँहसे कहलवा कर उनकी स्त्री सुताराके पास उनका संदेशा पहुँचवाया है। सुताराको एक विद्याधर हरकर ले गया था।

उसीके आधारपर यह ग्रंथ रचा गया है। हिन्दी भाषामें वडा अच्छा अनुवाद हुआ है। कीमत चार आना।

- ४. भक्तामर-कथा (मंत्रयंत्रसिहत)—स्वर्गीय ब्रह्मचारी रामछके वनाये भक्तामर कथाके आधारपर यह ग्रंथ वड़ी सीधी सादी हिन्दी भाषामें छपाया गया है। इसमें पहले भक्तामरके मूल सुन्दर श्लोक, फिर पं० गिरिधर शर्माका हिन्दी पद्यानुवाद, वाद मूलका खुलासा भावार्थ, फिर भक्तामरके मंत्रोंको सिद्ध करनेवालोंकी २३ सुन्दर कथाएँ, इसके वाद अन्तमें मंत्र, ऋदि और उनकी साधनविधि तथा अड़तालीस यंत्र, इस प्रकार योजना करके सर्व साधारणके लामार्थ यह ग्रन्थ छपाया गया है। कीमत सादी जिल्दका एक रूपया और कपड़ेकी पक्की जिल्दका सवा रूपया।
- ५. सुकुमाल-चरित-सार—सुकुमाल कुँवरका चरित वड़ा ही सुन्दर है। यह चरित पहले दो बार छपकर बिक चुका है। सर्व साधारणको यह चरित सुलमतासे पढ़नेको मिल सके, इसलिये स्व॰ ब्रह्मचारी नेमीदत्तके 'सुकुमाल-चरित-सार 'का यह नया अनुवाद छपाया गया है। कीमत डेढ आना।
- ६. सम्यत्त कामुदी—पुण्याश्रव, आराधना-कथाकाप सरीखा यह भी नेनकथा साहित्यका सुन्दर श्रन्थ है। इसमें सम्यक्त्वके प्राप्त करनेवालांका आढ मनोहर और धार्मिक कथाएँ है। पढ़नेमें वढ़ा मन लगता है। इसकी सरल और सुन्दर बोलवालकी संस्कृत भाषा हारा विद्यार्थांगण भी लाभ उटा सके. इसिलेये इसे हमने संस्कृत सहित लभवाया है। कीमत साई। जिल्ड़वालीका एक रूपया दो आना और काहेकी पक्षी निल्ड़वालीका एक रूपया छह आना।

- ७. श्रेणिक-चरित-सार—श्रेणिक-चरित वड़ा सुन्दर ग्रन्थ है। उसके द्वारा सर्व साधारण लाभ उठा सकें; इसलिए हमने स्व॰ ब्रह्मचारी नेमीदत्तके बनाये 'श्रेणिक-चरित-सार 'का यह अनुवाद् लपवाया है। कीमत तीन आना।
- ८. चन्द्रमभ-चरित—इसमें आठवें तीर्थंकर श्रीचन्द्रप्रम मग-वानका पवित्र और मनोहर चरित लिखा गया है । प्रसंगानुसार शृंगार, वैराग्य, वीर, करुणा आदि सभी रसोंका इसमें बड़ी ख़ूबीके साथ वर्णन किया गया है । अनतक यह केवल संस्कृत भाषामें ही था; पर एक महा कविके बनाये श्रेष्ठ कान्यकी सुन्दर और मनो-मोहक वर्णन-दौलीका रस पान हिन्दीके पाठक भी कर सकें, इसलिए हमने एक अच्छे विद्वान् द्वारा इसका हिन्दी अनुवाद कराकर प्रका-दिात किया है । यह विद्यार्थियोंके लिये भी बड़े कामकी वस्तु वन गई है । अनुवाद बड़ा सुन्दर और सरल हुआ है । कीमत सादी जिल्दका एक रुपया और कपड़ेकी पक्की जिल्दका सवा रुपया ।
- ९. नेमी-पुराण—इसमें वावीसवें तीर्थंकर नेमिनाथ भगवान्का पवित्र-चरित्र और राजकुमारी राजीमतीकी करुण-कथा बड़ी मुन्दर तासे छिली गई है । पढ़ते पढ़ते हृदय भर आता है। प्रसङ्गवश कृष्ण और उनके वीर-पुत्र प्रद्युम्नकुमारका मुन्दर चरित्र भी इसमें छिल दिया गया है। एक बार पढ़ना आरंभ करनेपर फिर पूरा किये विना छोड़नेको मन नहीं चाहता। संस्कृत भाषासे हिन्दीमें बड़ सरछ अनुवाद हुआ है । कीमत सादी जिल्दका दो रुपया। कप- डेकी पक्की जिल्दका सवा दो रुपया।

१०. सुदर्शन-चरित—'शील' पालनेवालों में सुदर्शनका नाम विशेष उल्लेख योग्य है । सुदर्शन वड़ा ही दृढ़-निश्चयी था। कामी क्षियोंने उसपर वड़े वड़े घोर उपसर्ग किये, पर सुदर्शन उनसे विल्कुल न डिगा। शीलके प्रभावसे उसपर किया गया तलवारका वार मोतियोंका हार वन गया। देवतोंने उसकी पूजा की। शील धर्ममें दृढ़ करनेके लिए सुदर्शन-चरित वड़ा उत्तम ग्रन्थ है। संस्कृतपरसे नया ही अनुवाद करके छपाया गया ह। कीमत नो आने। आगेके लिए 'पुण्याश्रव पुराण' और 'पद्मपुराण' तैयार हो रहे हैं।

हमारी छपाई हुई अन्य पुस्तकों।

- १. पंचास्तिकाय-समयसार—मूल्यन्थके वनानेवाले भगवान् कुन्दकुन्दाचार्य हैं । उसपर स्व० वनारसीदासनीके 'समयसार-नाटक' की तरह जहानाबाद निवासी श्रीयुत स्व० पं० हीरानन्दनीने दोहा, चोपाई, कवित्त, संवया आदिमें यह छन्दोबद्ध टीका लिखी है। यह आध्यात्मिक विषयका बड़ा ही उत्तम ग्रन्थ है। कीमत एक रूपया।
- २. अकलंक-चरित—इसमें 'अकलंक-स्तोत्र' और उसका हिन्दी पद्यानुवाद सहित श्रीअकलंक देवका जीवन-चरित्र छपाया गया है। हिन्दी पद्यानुवाद खड़ी बोलीकी कवितामें हरएककी समझमें आने योग्य और सुन्दर है। मूल्य तीन आना।
- २. हिन्दी-भक्तामर—यह पं० गिरिधरशर्माकृत खड़ी बोलीकी हिन्दी कवितामें संस्कृत 'भक्तामर-स्तोत्र' का अनुवाद है । मूल्य सवा आना ।
- ४. हिन्दी-कल्याण-मंदिर—यह पं शिरिधरशर्मा कृत खड़ी बोलीकी हिन्दी कवितामें संस्कृत "कल्याण-मंदिर" का अनुवाद है। गुल्य एक आना।